सवाने हयात

पीरे कामिल ग़ौसुल आ़लम मजज़ूबे इलाही ज़ुलफिकारे विलायत हज़रत ख़्वाजा सरकार हाफिज़ सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती निज़ामी फखरी सुलेमानी क़ादरी नक़्शबंदी सोहरवर्दी उर्फ चचा मियां "बादशाह मियां" रहमतुल्लाह अलैह (जोबट शरीफ अलीराजपुर मध्यप्रदेश)।

उर्स मुबारक

*बतारिख :- 19 सफरुल मुजफ़्फ़र*_

दरबार हज़रत सय्यद महमुदुल हसन बादशाह मियां र.अ जोबट शरीफ मध्य प्रदेश

⁎शिजरा ए पीराने चिश्त अहले बहिश्त :-⁎

*{ शिजराए सिलसिला ए चिश्तिया, निजा़मिया-फखरिया-सुलैमानिया }*

⁎***अल्लाहुम्मा स्वल्ले वसल्लिम सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व आले सैय्यिदिना मुहम्मदिन सैय्यिदिल अंबियाए व शफी़उल यौमुल क़दाए ०***

**بسم الله الرحمن الرحيم*

या _इलाही_ माया-ए-सद नाज़ _हाफ़िज़_ का तुफैल,,

गौहरे गंजीन-ए- ऐजाज़े _हाफिज़_ का तुफैल।।

_फैज़याबे फ़ैज़_ खुश अंदाज़ _हाफ़िज़_ का तुफैल,,

"हज़रते महमूद" सर- अफराज़ _हाफ़िज़_ का तुफैल।।

दे मुरादे सबकी _शाहे अम्बिया_ के वास्ते।।।

आपका नामो नसब :- ⁎आपका नाम मुबारक हज़रत हाफिज़ ख्वाजा सैय्यद _महमूदुल हसन_ चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह है। आपके वालिद साहब का नाम मुबारक पीरे कामिल गौ़सुल आलम हज़रत हाफ़िज़ ख्वाजा सैय्यद _अब्दुल मजीद शाह_ चिश्ती कादरी नक़्शबंदी सोहरवर्दी फखरी साबरी सुलेमानी नियाज़ी निजामी उर्फ दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर शरीफ) है और आप अपने वालिद साहब के चौथे साहबजादे हैं। आपका शिजराए नसब _बड़े पीर सरकार हज़रत सैय्यदना शैख अब्दुल क़ादिर जिलानी ग़ौसे आ़ज़म दस्तगीर रहमतुल्लाह अलैह {बगदाद शरीफ}_ से होते हुए _मौलाए क़ायनात हज़रत मौला अ़ली कर्रामुलल्लाहु तआ़ला वजहुल करीम_ से जा मिलता है। वालिदे बुज़ुर्गवार की तरफ से आप _हसनी सैय्यद_ हैं।⁎
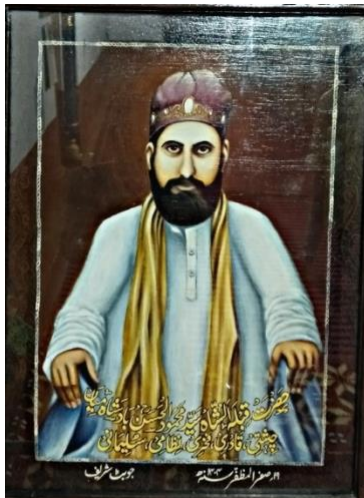
*तस्वीर हज़रत सय्यद महमुदुल हसन बादशाह मियां र.अ**

और _हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह_ वालिदा मोहतरमा की तरफ से _हुसैनी सैय्यद_ हैं। आपके नाना जान का नाम मुबारक _हज़रत ख़्वाजा सैय्यद मीर ऐवज़ अ़ली चिश्ती गुरदेज़ी रहमतुल्लाह अलैह_ (अलीराजपुर) है जो कि अपने वक्त के बहुत बड़े बुजुर्ग वली गुज़रे हैं और आज भी आपका नाम मुबारक हैदराबाद के चारमीनार में दर्ज है। _हज़रत ख़्वाजा सैय्यद मीर ऐवज़ अ़ली चिश्ती गुरदेज़ी रहमतुल्लाह अलैह_ का शिजराए नसब _हज़रत ख़्वाजा बंदा नवाज़ गेसु दराज़ चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह_ (कर्नाटक) से होता हुआ _शहीदे कर्बला हज़रत सरकार सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम_ से जा मिलता है।*

इस तरह हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती उर्फ चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह को _"नजीबुत-तरफ़ैन सैय्यद"_ होने का शर्फ हासिल है।

आप की पैदाइश:- *_हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती उर्फ चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह_ की विलादते बासआदत जोबट शरीफ जिला अलीराजपुर मध्य प्रदेश में हुई। आप रहमतुल्लाह अलैह _अल्लाह तबारक व तआ़ला_ के पैदाइशी वली हैं। बचपन से ही आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वालिदे माजिद के साथ औलिया अल्लाह की दरगाह शरीफ और अपने वक्त के बुजुर्गों से सोहबत हासिल करने और उनसे तसव्वुफ और दीगर फैज़ हासिल करने के लिए जाया करते थे।*

तालीमो-तरबीयत:- *आपने शुरुआती तालीम अपने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह से हासिल की। मज़ीद इल्म हासिल करने के लिए आपने गुजरात शरीफ की तरफ रूख किया और तमाम दीनी व दुनियावी उलूम के साथ-साथ आपने कुरआन शरीफ का हाफिज़ा मुकम्मल किया। उसके बाद आप

रहमतुल्लाह अलैह ने इबादतो रियाज़त व मुजाहिदात और तेज़ी से शुरू कर दिए और हर वक्त खुदा ताआ़ला की याद में मशगूल रहते। आप रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत से मकामात बहुत कम समय में हासिल कर लिए।*

बैअत व खिलाफत:- *आप अपने वालिद _हज़रत हाफिज़ ख्वाजा सैय्यद अब्दुल मजीद शाह चिश्ती नियाज़ी निजा़मी साबरी सुलेमानी उर्फ दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह_ (जबलपुर शरीफ) के मुरीद जानशीनो खलीफा साहिबे सज्जादा नशीन व गद्दी नशीन हैं। आपको रूहानियत का जाम _सूफिए बा-सफा हज़रत ख़्वाजा "बादशाह मियां हलोली" रहमतुल्लाह अलैह {हलोल शरीफ, गुजरात}_ ने अ़ता किया।*

*_हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती उर्फ चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह_* से बेतहाशा करामातों ज़हूर हुआ और आपने बहुत से परेशान हाल लोगों की परेशानीयां बड़ी आसानी से हल फरमा देते।

निकाह व आल ओलाद :- *आपका निकाह _खलीफतुल मुस्लिमीन हज़रत "सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल-लाहू ताआ़ला अन्ह"_ के खानदान मुबारक में हुआ। आपके एक साहबजा़दे थे जिनका नाम _हज़रत ख्वाजा मौलवी सैय्यद ज़हूरूल हसन चिश्ती नियाज़ी निजा़मी साबरी सुलेमानी क़ादरी नक़्शबंदी सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह_ है।*

* इसके बाद _हज़रत ख़्वाजा सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती उर्फ चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह_ अपनी रियाज़ातो इबादत से सालिक मज़ज़ूब के मंसब पर फाईज़ हुए और वज्द की कैफियत में चले गए और आपने सारी जिंदगी मजज़ूब की कैफियत में ही गुज़ारी।* आपने हजारों लोगों को अपने *_हकी़की़ रब_* की तरफ रुजू करवाया। आपके दरबारे आलीशान में हजारों लोग अपनी फरियाद लेकर आते और उन्हें कुछ ही लम्हों में पूरा होते हुए पाते।

शहज़ादा ए हुज़ूर बादशाह मियाँ हज़रत मौलवी सय्यद ज़हुरुल हसन र. अ

आपके मुरीद व खलीफा :- *आपके मुरीद व खलीफा में इंसानों के साथ साथ जिन्नात भी कसीर तादात में शामिल हैं। आपके मुरीद जोबट शरीफ, जबलपुर शरीफ, अलीराजपुर, झाबुआ, नरसिंहपुर, नागपुर, गुजरात, होशंगाबाद, भोपाल, दिल्ली, बनारस,भदोय, बालाघाट, दमोह,सवीनी, मीरजापुर, इलाहाबाद, के साथ-साथ बहुत सी जगहों में फैले हैं।*

***आपके खलीफा :-**

आपके पहले खलीफा आपके सबसे बड़े भाई _शहर क़ाज़ी ए जोबट शरीफ हज़रत ख़्वाजा अ़ल्लामा मौलाना सैय्यद अहमद हसन चिश्ती क़ादरी सुलेमानी नियाज़ी निजा़मी साबरी नक़्शबंदी सोहरवर्दी फखरी मजीदी रहमतुल्लाह अलैह_ {जोबट शरीफ} हैं। आपका मज़ारे मुबारक _हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह_ के मजा़रे मुबारक के बाजू में ही मौजूद है।

आपके दूसरे खलीफा आपके _शहज़ादे हज़रत ख़्वाजा मौलवी सैय्यद ज़हूरूल हसन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह_ {जोबट शरीफ} हैं। _हज़रत चचा मियां उर्फ बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह_ ने अपनी हयात में ही आपको अपना सज्जादा नशीन गद्दी नशीन व तख्त नशीन बनाया। आपका मज़ारे मुबारक _हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह_ के मजा़रे मुबारक के करीब ही मौजूद है।

* _हज़रत चचा मियां उर्फ बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह_ हर वक्त हर लम्हा रब तआ़ला की याद में मशगूल रहते। आपके चाहने वाले जब भी कभी आपको सच्चे दिल से याद करते आप उसके पास फौरन पहुंच जाते और जो भी परेशानी होती खुदा ताआ़ला के हुक्म से दूर फरमा देते ।*

विसाल:- *_पीरे कामिल मजज़ूबे इलाही हज़रत हाफिज़ सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती नियाज़ी निजा़मी का़दरी नक़्शबंदी सोहरवरदी सुलेमानी रहमतुल्लाह अलैह_ 19 सफ़र मुबारक को इस दुनिया ए फानी से कूच करके अपने रब्बे हक़ीक़ी से जा मिले। आपका मजा़रे मुक़द्दस जोबट शरीफ जिला अलीराजपुर मध्य प्रदेश में मौजूद है और हर खासो आम के लिए मरजए खलाईक़ है। लोग आज भी आपको ज़िंदा वली कहकर याद करते हैं। 19 सफ़र मुबारक को आपका उर्स मुबारक बड़ी शानो-शौकत के साथ मनाया जाता है हिन्दुस्तान के गोशे-गोशे से आपके चाहने वाले आपके उर्स शरीफ में शिरकत करते हैं और अपने हिस्से की सआ़दत हासिल करते हैं।

मज़ार हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह वा हज़रत सय्यद अहमद हसन रहमतुल्लाह अलैह

एक बूढी खातून को नई ज़िंदगी बख्शना :

जबलपुर में रहने वाले एक भाई जिनका नाम नियाज़ है वोह बताते हैं की बादशाह मियां के वक़्त में एक निहायत ही बूढी खातून रहती थीं जिनको लोग प्यार से हल्लो बुआ कहकर बुलाते थे बस वोह अपने आखरी आयाम में पहुंच चुंकि थीं और लोग उनके बारे में बस इतना ही कहते जैसे कि आज मरे कल दूसरा दिन और जब वह बिल्कुल अलील हो गई तो किसी जनाब ने कहा चलो एक बार बादशाह मियां को बुला लेते हैं सब के सलाह मशवरे के बाद हज़रत बादशाह मियां को बुलाया गया जब आँ हज़रत उस बूढी खातून की इयादत के लिए आए तो उस बूढी खातून को देखते ही आप उसे बेतहाशा मारने लगे और लोग बातें करने लगे कि बस अब ये बुढ़िया बादशाह मियां की मार से समझो मर गई मगर बादशाह मियां के जाने के बाद वोह बुढ़िया जिसे लोग हल्लो बुआ के नाम से जानते हैं वोह तंदरुस्त हो गई और

फिर उसके बाद नियाज़ भाई बताते हैं कि बादशाह मियां की मार के बाद हल्लो बुआ काफी लंबे अरसे तक इस दुनिया में रही और फिर एक दिन हुकमे इलाही से इस दुनिया से कूच कर गईं ।

–

अल्लाह वाले हर वक़्त इबादत में रहते हैं

जबलपुर शहर में बादशाह मियां के ज़माने में एक बहुत मशहूर हाफ़िज़ साहब रहते थे जिनको लोग कुल्लन हाफ़िज़ जी कहते थे वोह हज़रत बादशाह मियां सरकार के मुरीद भी थे उनका रोज़ाना का मामुल था के रोज़ सुबह सबसे पहले हज़रत की बारगाह में हाजरी लगाना और फिर दूसरे काम करना। रमज़ान शरीफ के महीने में एक दिन उनके दिल में अचानक खयाल आया कि मेरे पीर साहब तो नमाज़ रोज़ा ही नहीं करते मगर उन्होंने ने यह बात और किसी को नहीं कहीं। अपने मामूल के मुताबिक जब कूल्लन हाफ़िज़ साहब दूसरे दिन हज़रत बादशाह मियां सरकार की खिदमत में हाजरी लगाने गए तो सीढ़ी के पास पहुंचे ही थे कि उतने में हज़रत आ पहुंचे और कुल्लन हाफ़िज़ साहब को गालियां बकने लगे और उनको बड़बड़ाते हुए कहते हैं तू मेरे रोज़े नमाज़ देखता है इतना सुनना था कि कुल्लन हाफ़िज़ साहब बादशाह मियां के क़दमों में गिर पड़े और माफी तलब की और कहने हज़रत मुझे माफ करे शैतान ने मुझे बरगलाया था।
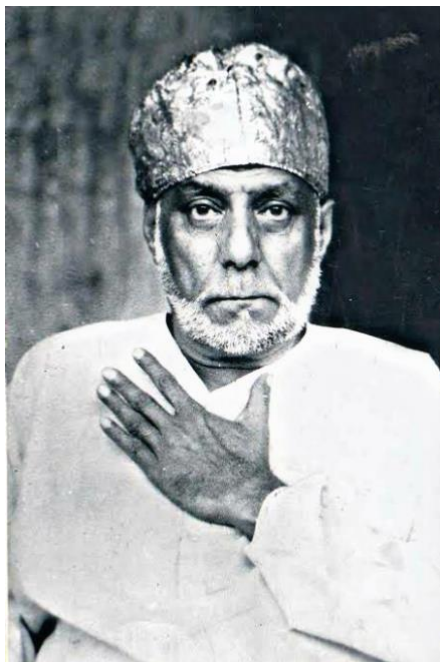
*तस्वीर हज़रत सय्यद महमुदुल हसन बादशाह मियां र.अ**

बेसाहारो की मदद

एक बार दो औरतें जो कि ज़िला कटनी मध्यप्रदेश की रहने वाली थीं वोह निहायती गरीब और फाका कशी का शिकार थीं और वोह मजज़ूबे इलाही हज़रत बादशाह मियां सरकार से मिलने के लिए जबलपुर आईं । जबलपुर आने के बाद उनके पास महज़ एक रुपया बचा था जिससे उन्होंने अठन्नी रुपए का इस्तमाल कर कुछ खाना खा लिया और जो अठन्नी बची थी उससे हज़रत बादशाह मियां के लिए एक कप चाय और एक पान खरीद लिया और हज़रत से मिलने के लिए निकल पड़ीं उस वक़्त हज़रत अपने कुछ मुरीदों के साथ आराम फरमा थे उन औरतों के आने के पहले उस वक़्त की जबलपुर शहर की सांसद रत्नाकुमारी हज़रत से मिलने के लिए अाई और हज़रत की बारगाह में एक नोटों से भरा थैला हज़रत की बारगाह में पेश करके चली गई और उसके कुछ देर बाद ही कटनी से वोह दो औरतें भी हज़रत से मिलने के लिए हाज़िर हो गईं और उन्होंने बड़े अकीदत से हज़रत की बारगाह में चाय और पान पेश किया बस फिर क्या था हज़रत ने वोह नोटों से भरा थैला उस औरत को थमा दिया जिसने हज़रत को चाय और पान पेश किया था । फिर वोह दोनों औरतें वहां से खुशी खुशी चली गईं हज़रत के कुछ मुरीदों ने उन औरतों से पूछा के माजरा क्या है तो उनमें से एक औरत ने कहा हम बहुत ही गरीब हैं और कटनी से आए हैं हमारी बेटी की शादी कुछ ही वक़्त में होने वाली है और घर में गरीबी की वजह से पैसा भी नहीं है किसी ने सलाह दी थी कि जबलपुर में एक ज़िंदा वली जलवा फरमा है तुम उनसे जाके मदद मांगो और फिर हम बिना वक़्त गवाएं हज़रत से मिलने के लिए निकल पड़े और हज़रत ने हमारी दिल की परेशानी बिना पूछे ही हल कर दी।

गुमे हुए पैसे लौटा कर देना:-

जबलपुर में रहने वाले एक शक्स जिनका नाम मेहमूद है वोह बादशाह मियां के ज़माने में सरकारी नौकरी करते थे। उन्हें अपने पैसों का बहुत घमंड था बताने वाले यहां तक बताते हैं कि वह इतना दिखावा करते थे कि कोई भी आदमी निकले तो उसके सामने पैसे गिरा कर पैसों मै झाड़ू लगाते थे हर वक़्त अपने घमंड में चूर रहते थे। एक दिन किसी ने उनके घर से पैसे से भरी पेटी चुरा ली वोह बहुत घबरा गए कि मेरे पैसे कहां गए हर जगह ढूंढ लिए मगर कहीं भी पैसे नहीं मिले यहां तक की थाने में

रिपोर्ट दर्ज करवा ली मगर कुछ भी पता नहीं चला।फिर उनके दिल में ख्याल आया कि एक बार आपना दर्द बादशाह मियां को बताते है । उनका दुख सुनने के बादशाह मियां ने अपने पैर से चप्पल उतारी और एक नाली के पाइप में मारने लगे और फिर बिना कुछ कहे चले गए। अगले दिन सुबह जब सफाई करने वाली बाई मेहमूद भाई के घर के पास नाली के पास सफाई करने आई तो देखती है कि किसी कि पेटी नाली के पास डली है उन्होंने आवाज़ लगाकर पूछी की किसकी पेटी गिरी है तो मेहमूद भाई देखते हैं कि वोह उनकी ही पैसों से भरी पेटी है जो चोरी हो गई थी उस पेटी को उन्होंने खोल कर देखा तो पैसे उसमें सही सलामत थे और फिर वोह अपनी पैसों से भरी पेटी खुशी खुशी घर लेकर चले गए। सुबहान अल्लाह।

अपने मुरीदों को अजमेर शरीफ जाने के लिए मदद करना :-

जबलपुर में रहने वाले हाजी सलीम बयान करते हैं कि एक रोज़ उनकी चाय की होटल में हज़रत बादशाह मियां सरकार के कुछ मुरीद (जिनमें से कुछ के नाम ये हैं - बाबू सब्जी वाले, मक्कू, मकसूद, मकबूल पाकिस्तान वाले इसके अलावा और भी हो सकते हैं) यह लोग उनकी दुकान में बैठे बैठे बात करने लगे कि अजमेर शरीफ का उर्स करीब है हमें जाना चाहिए मगर हमारी माली हालत अच्छी नहीं है के अजमेर शरीफ जा सकें यही पाकीज़ा ख्याल दिल में रख के वोह लोग उठे और कहा चलो हज़रत बादशाह मियां सरकार से अपने दिल की बात बताते हैं । सभी हजरात हज़रत बादशाह मियां के पास पहुंचे और अपनी मुराद बता दिए हज़रत ने उन्हें अजमेर शरीफ जाने के इजाज़त देदी। इसके बाद उन्होंने पूरे में हल्ला कर दिया कि हम अजमेर शरीफ जा रहे हैं हज़रत ने भी हमें इजाज़त अता करदी, मगर उनको यह डर भी सताने लगा कि हमने सब जगह हल्ला तो कर दिया मगर अजमेर शरीफ जाने का इंतजाम नहीं हुआ । बस फिर वोह लोग हज़रत की बारगाह में बैठे गए हज़रत ने कुछ देर बाद उनमें से एक शख्स को बुलाया और अपनी सलवार की खुटिया से कुछ निकाल कर दिया और वोह उसे लेकर चले गए उन्होंने उस चीज़ को एक थैले में डाल दिया और सबने फिर जो कुछ भी पैसे इकट्ठा किए उसी थैले में डाल दिया । अल्लाह कि रहमत से उस थैले में इतनी बरकत हुई कि वह लोग बिना किसी परेशानी के अजमेर शरीफ उर्स में पहुंच गए और दिल खोल कर उस थैले से पैसे निकाल निकाल खर्च किए यहां तक कि वोह बताते हैं उर्स से लौटने के बाद जबलपुर आकर ही पैसे खत्म हुए। माशा अल्लाह।।।

हज़रत बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह का ख्वाब में आकर अपने चाहने वाले की परेशानी दूर करना :-

जबलपुर सुलेमानी मस्जिद के पास रहने वाले एक भाई जिनका नाम नियाज़ है जो कि साइकिल रिपेयर का काम करते हैं और उनकी दुकान अनवर गंज मस्जिद के सामने थी वोह बताते हैं की उनका कारोबार बहोत अच्छा चल रहा था मगर किसी वजह से उनकी दुकान के मालिक ने दुकान खाली करवा दी वोह भाईसाहब बाहोत परेशान रहने लगे यहां तक कि खाने पीने के लाले पड़ने लगे मगर उनकी दादा मियां से बेपनाह अक़ीदत थी वोह दादा मियां की मजा़र पर ही बैठे रहते ऐसे करते लगबघ आधा साल गुज़र गया फिर एक दिन हज़रत बादशाह मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह उनके ख्वाब में आए और उन भाईसाहब से कहने लगे परेशान क्यों हो उन्होंने हज़रत को कोई जवाब नहीं दिया फिर हज़रत ने दुबारा पूछा परेशान क्यों हो फिर उन्होंने हज़रत को कोई जवाब नहीं दिया जब हज़रत ने तीसरी बार पूछा परेशान क्यों हो। तो उन्होंने हज़रत से कहा आप लोग जानते हो की मेरी दुकान बंद हो गई है मैं बहोत ही परेशान हूं फिर भी आप मेरी परेशानी दूर नहीं कर रहे तो हज़रत बादशाह मियां ने उनको बशारत दी कि तुम्हारी नयी दुकान बकरा ईद के तीन दिन पहले खुल जाएगी और यह कह कर हज़रत गायब हो गए। और फिर वोह बताते हैं की वाकई में उनकी दुकान ईद के तीन दिन पहले शुरू हो गई और उन्होंने हज़रत के नाम की खूब नज़रों नियाज़ दादा मियां के दर पर पेश की ओर इन सब तबारुकात का पैसा कहां से आता उनको खुद पता नहीं चल पाया और उन्होंने लगातार तीन जुमा दादा मियां की दरगाह में तबर्रुक तकसीम किया।

पेट से कृष्ण भगवान की मूर्ति और एल्युमिनियम के सिक्के निकालना:-

जबलपुर के सदर में रहने वाले एक शख्स जिनका नाम अब्दुल खालिक था उनको हज़रत बादशाह मियां सरकार से बेपनाह मुहब्बत थी उनका मामुल था कि जब भी कभी वक़्त मिलता हज़रत की बारगाह में पेश हो जाते हत्ता के हज़रत के ना होने पर भी उनके मकाम में हाज़री ज़रूर देते । एक दिन हज़रत बादशाह मियां से मिलने आए तो हज़रत नहीं मिले मगर जहां हज़रत बैठते थे वाहा हाजरी लगाकर वापस जाने लगे तो उनको इस्तिंजे की हाजत पेश अाई। उनको बाथरूम से निकलने में बहुत देर हो गई तो कुछ लोग देखने के लिए गए बाथरूम का दरवाजा बंद था उनको दरवाज़ा तोड़ कर बाहर निकालना पड़ा उनके पूरे जिस्म में ब्लेड से लगने वाले जख्म मौजूद थे मगर किसी को कुछ पता नहीं चला के ये कैसे हुआ हज़रत बादशाह मियां सरकार के कहने पर उनको उल्टी करवाई गई तो उनके पेट से गट्रमला, कुछ उस ज़माने के एल्युमिनियम के सिक्के और एक पीतल से बनी कृष्ण भगवान की मूर्ति निकली यह सब निकलने के बाद वोह पूरी तरह सेहत्याब हो गए । अब्दुल खालिक साहब बताते हैं की उनके ऊपर जिन असेब का साया था जिसकी वजह से बहुत परेशान रहते थे मगर उस किस्से के बाद मुझे कभी जिन असेब का साया महसूस नहीं हुआ।

- पान की पीक से मरीज़ को शिफ़ायाब करना और डॉक्टर का अकीदतमंद होना :-*_

*जबलपुर शहर शुरू से वलियों* का पसंदीदा मरकज़ रहा और यहां के बाशिंदे इन वलियों से खूब फ़ैज़ हासिल करते रहे हैं इन्हीं वलियों की फेहरिस्त में एक नाम जो आज भी बड़े ताज़ीमों अदब से लिया जाता है, वोह नाम है _*पीरे कामिल मजज़ूबे इलाही हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती उर्फ चचा मियां बादशाह मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह।*_ आपके जानने मानने चाहने वालों का एक बहुत बड़ा खैमा है जो पूरे जबलपुर और जोबट शरीफ के साथ-साथ पूरी दुनिया में फैला हुआ है। आपकी बदौलत बहुत से लोगों की परेशानीयां हल हुई , बहुत कसीर तादाद में बीमारों को शिफा हासिल हुई।

इन्हीं में एक साहब का किस्सा काबिल बयान है कि _*आंहज़रत*_ के वक़्त में एक शख्स के हाथों में बहुत बुरी तरह के दाग और छाले हो गए। दर्द नाकाबिले बर्दाश्त रहता उसने अपने हाथों का इलाज जबलपुर के एक बड़े डॉक्टर,, _*डॉक्टर के.सी. जैन*_ के क्लीनिक में करवाया और डॉक्टर ने मरीज़ के हाथ देखते ही कहा कि बैक्टेरिया पूरे हाथों में बुरी तरह फ़ैल गए हैं। अगर हाथों को काटा नहीं गया तो अंदेशा है कि बहुत बड़ा खतरा हो सकता है। यह सुनकर वोह शख्स घबरा गया।

कुछ लोगों ने सलाह मशवरा दिया कि _*हज़रत चचा बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ के दयार में हाज़िरी दो और _*हज़रत किबला बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ की पान की पीक, पीकदान से निकाल कर अपने हाथों में मलो। इंशाअल्लाह तुम्हें ज़रूर शिफा मिलेगी। यह सुनकर वह शख्स रोज़ाना _*हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ की कयामगाह हाज़िरी लगाने के लिए जाने लगा और आप *रहमतुल्लाह अलैह की पान की पीक* अपने हाथों में मलने लगा। ऐसा रोज़ाना करने से उसे कुछ ही दिनों में अपने हाथों में जो खराब हो चुके थे नई ताकत सी महसूस होने लगी और हाथों से दाग धब्बे के निशान गायब होने लगे गरज़ यह की उसके हाथ _*हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ की पान की पीक की बरकत से सही हो गए मगर अपनी तसल्ली के लिए जब वोह दुबारा *डॉक्टर के.सी. जैन* के पास हाथों को चैक करवाने के लिए गया तो डॉक्टर यह देख कर दंग रह गया के उसके वोह हाथ जो बैक्टेरिया की वजह से पूरी तरह खराब हो चुके थे जिन्हें काटने की नौबत आ गई थी वोह ठीक कैसे हो गए। फिर डॉक्टर साहब ने उस शख्स से पूछा कि तुम्हारे हाथ ठीक कैसे हुए तो उसने पूरा माजरा सुना दिया। यह सब सुनने के बाद डॉक्टर के दिल में _*ज़िंदा वली हज़रत चचा मियां बादशाह मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह*_ के लिए मुहब्बत की कलियां फूट पड़ीं। _*डॉक्टर के. सी. जैन*_ ने जब हाथ के मरीज़ की शिफा वाली _*हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ की करामत अपनी आंखों से देखी तो उसके दिल में _*हज़रत चचा मियां बादशाह मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह*_ के लिए मुहब्बत की कलियां फूट पड़ीं उसका दिल हज़रत के दीदार

के लिए तड़पने लगा और आखिर वो दिन आ ही गया । _*डॉक्टर जैन*_ को _*हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ कि ज़ियारत नसीब हुई। डाक्टर ने हज़रत की दस्तबोसी क़दमबोसी और अपनी अकीदत का इज़हार किया। उसके बाद जब भी कभी वक़्त मिलता _हज़रत_ से मिलने के लिए पहुंच जाता। कभी हज़रत के सरे मुबारक में चमेली के तेल से मालिश करता तो कभी हज़रत के हाथ पांव दबाता और हज़रत की खिदमत में जो कुछ भी हो सकता करता था।

फिर अचानक एक दिन _*हज़रत चचा मियां बादशाह मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह*_ रात के वक्त अपने ड्राइवर के साथ _*डॉक्टर जैन*_ के घर पहुंच गए और इधर उधर घूमने लगे। डॉक्टर जैन कि मां को आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने पास से तम्बाकू निकाल कर खिला दी और फिर _*हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ डॉक्टर जैन के घर की छत पर घूमने लगे और गुस्से में कुछ बोलने लगे। इसके बाद _*हज़रत*_ , डॉक्टर जैन के घर से चले गए। कुछ लोगों ने डॉक्टर जैन से पूछा कि आखिर माजरा क्या है तो उन्होंने बताया कि _"छत से बहुत डरावनी आवाज़ें आती थीं ऐसा लगता था कि छत में कोई शह-बला है"।_

लेकिन _*हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ के छत से जाने के बाद कभी भी डरावनी आवाज़ें नहीं आईं , और मेरी माता जी भी बता रही थीं कि जब हज़रत उन्हें तम्बाकू खिला रहे थे तो ऐसा लग रहा था कुछ मीठा खा रही हूं। तंबाकू की कड़वाहट का ज़रा सा भी एहसास नहीं हुआ।।

सुबहान अल्लाह।

लाज रखते हैं अपने मंगतों की :-

जबलपुर में एक सरदार डॉक्टर आहलूवालिया जी (आखों के स्पेशलिस्ट) का अस्पताल था और उनके जानने वाले बाबा सरदार (सिंह कम्पनी के मालिक ज्योति टाकीज नौदरा पुल जबलपुर) वालों के यहाँ एक गुरु जी महाराज आते थे जिनके मानने वाले डॉक्टर साहब और बाबा सरदार आदि थे जहां पर अक्सर मोहम्मद अली साहब (बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद) का जाना होता था। गुरु जी महाराज को लोग बहुत मानते थे। गुरु जी लोगों को कुछ न कुछ देते और साथ कहते थे कि यह चीज़ (अंगूठी, पत्थर, वगैरह) आप अपने घर में रख लो कल यही चीज़ मेरे पास वापस आ जाएगी, और ऐसा होता भी था जिसकी वजह से लोग उन्हें बहुत मानते थे। एक दिन मोहम्मद अली साहब से आहलूवालिया जी की दुकान पर गुरू जी की मुलाक़ात हो गई, बातों बातों में मोहम्मद अली साहब को गुरु महाराज ने अंगूठी थमा दी और कहा कि यह अपने घर में रख लो कल यही चीज़ मेरे पास वापस आ जाएगी, तब मोहम्मद अली साहब ने कहा कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता तो गुरु जी ने चुनौतीपूर्ण

अंदाज़ में कहा देखोगे कल तुम कि ऐसा ही होगा। मोहम्मद अली साहब खनवादा ए दादा मियां से बेपनाह अक़ीदत, मोहब्बत रखने वाले हैं, इसी यक़ीन के साथ उन्होंने ने गुरू जी महाराज की चुनौती को स्वीकार कर लिया और अपने घर आ गए। हज़रत ख़्वाजा *सैयद महमूदुल हसन "बादशाह मियां"* क़ादरी, चिश्ती, निज़ामी फख़री सुलेमानी रहमतुल्लाह अलैह (जोबट शरीफ) का लिबास ए मुबारक जो तबर्रुक़न मोहम्मद अली साहब के पास पेटी में रखा रहता है, अंगूठी को लिबास ए मुबारक में रखकर पेटी बंद कर के आराम से सो गए। अगले दिन मोहम्मद अली साहब ने पेटी खोलकर देखा तो अंगुठी वहीं मौजूद थी, फिर क्या था मोहम्मद अली साहब ने तैयारी की और पहुंच गए आहलूवालिया जी के वहाँ गुरु जी महाराज के पास और अंगूठी देते हुए कहा यह लो अपनी अंगूठी, खुद से नहीं आई बल्कि मैं लाया हूँ, तब गुरु जी ने इज़्ज़त के साथ मोहम्मद अली साहब को बिठाकर थोड़ी देर में अपने भक्तों से फ़ुर्सत पा कर बात-चीत शुरू की और कहा कि वाकई तुम्हारे गुरु असीम शक्तिशाली हैं और उनके आगे मेरी चुनौती बेकार गई मेरा कोई बस नहीं चल सका और मैं नतमस्तक हूं।

शिजराए सिलसिलाए मुबारिका क़ादरीया-*_

بسم الله الرحمٰن الرحيم-

*_इलाही बहुरमतिब-निहिल करीमिल फाइज़ यम क़ामुल कैफे वल जज़बिल ख्वाजा अस-सैय्यिद हज़रत सुल्तान *मुहम्मद महमूद बादशाह जोबट शरीफ* रज़ियल्लाहू तआ़ला अ़न्ह।_*

हज़रत चचा मियां बादशाह मियां र.ह. को मारिफत का जाम अता होना :-*_ _

मजज़ूबे इलाही हज़रत ख़्वाजा सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती क़ादरी सुलेमानी रहमतुल्लाह अलैह (जोबट शरीफ़) अकसर अपने वालिदे माजिद पीरे कामिल गौसुल आ़लम हज़रत ख़्वाजा सैय्यद हाफिज़ अब्दुल मजीद शाह चिश्ती क़ादरी सुलेमानी उर्फ दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर शरीफ)*_ के साथ मुल्क भर की दरगाहों व खानकाहों पर बुज़ुर्गों से फैज़ हासिल करने के लिए जाया करते और आप अपने वक्त के बड़े बड़े _*औलिया अल्लाह*_ से मुलाकात कर ज़ाहिरी और बातिनी उलूम से सरफराज़ होते।

इसी तरह आप अपने वक्त के बहुत बड़े _*मज़जूब वली सूफिए बा-सफा हज़रत ख़्वाजा सरकार बादशाह मियां हलोली रहमतुल्लाह अलैह (हलोल शरीफ, गुजरात)*_ के पास अपने वालिद साहब के साथ जाया करते थे।

एक बार जब आप _*रहमतुल्लाह अलैह*_ अपने वालिदे माजिद के साथ हलोल शरीफ़ तशरीफ़ ले गए

तब आप के वालिद _*हज़रत ख़्वाजा सैय्यद हाफिज़ अब्दुल मजीद शाह चिश्ती क़ादरी सुलेमानी

*दरगाह हज़रत ख़्वाजा "बादशाह मियां हलोली" रहमतुल्लाह अलैह {हलोल शरीफ, गुजरात}_*

रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत ख़्वाजा बादशाह मियां हालोली रहमतुल्लाह अलैह*_ से मुलाकात कर अपनी बात में मसरूफ हुए। फिर किसी हाजत से आप थोड़ी देर के लिए कहीं चले गए उस वक्त _*हज़रत ख़्वाजा सरकार बादशाह मियां हालोली रहमतुल्लाह अलैह*_ ने एक प्याला _*हज़रत ख़्वाजा सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती उर्फ चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ को पिलाया। जिसे पीने के बाद _*हज़रत चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह*_ को मारिफते इलाही अता हुई और आपका ज़ाहिर और बातिन पूरी तरह से पाक हो गया। उस जामे मारिफ़त को पीने के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह _*सिलसिलाए आलिया चिश्तिया के मजज़ूबे इलाही बुज़ुर्ग*_ के मंसब पर फाईज़ हुए और जोबट शरीफ व जबलपुर शरीफ ही नहीं बल्कि तमाम वोह जगह जहां पर आपका कदम मुबारक पड़ा वह जगह नूर से मामूरो मुनव्वर हुई और आप _*हज़रत ख़्वाजा सैय्यद महमूदुल हसन चिश्ती उर्फ चचा मियां बादशाह मियां रहमतुल्लाह अलैह ,, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बरहैना तलवार थे। "अल्लाह की बरहैना तलवार" का लक़ब किसी और दुनियादार ने नहीं दिया बल्की बरेली शरीफ के ताजदार मुस्तफा जाने रहमत के गुलाम, सैय्यदों के दर के नौकर जानशीने आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान (रहमतुल्लाह अलैह), के फरज़ंद हज़रत अल्लामा मौलाना हुज़ूर मुस्तफा रज़ा खान बरेलवी उर्फ हुज़ूर मुफ्ती ए आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह*_ ने अता किया। अब हम उसे प्याले के जाम की बरकत कहें या फिर एक वली के झूठे पानी या खाने की बरकत जो भी हो यह सब _*अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त*_ के

नेक बंदों की सोहबत का असर है। जो मर्दे मोमिन को नेक और स्वालेह बनाती है। मुझ हकीरो फकीर में इतनी जुर्रत कहां की _*मौलाए क़ायनात मौला अ़ली अलैहिस्सलाम*_ की आ़ल अहले बैते अतहार की ताज़ीम में कुछ लिख सकूं। _*अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त*_ अपने नेक बंदों के सदके तुफैल हमारे गुनाह को माफ करे और सही दीनी ज़िन्दगी बिताने की तौफीक दे।

आमीन।।

तालिब ए दुआ दादा मियाँ ग्रुप जबलपुर वा जोबट् शरीफ

8964885401